प्रातःक्लास 20/6/68 पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। पहला–पहला बाप का सबक है अपन को आत्मा समझो। अथवा मनमनाभव। यह है संस्कृत का अक्षर। अभी बच्चे जब सर्विस करते हैं तो पहले–2 ही उनको अलफ पढ़ाना है। जब भी कोई आवे तो शिवबाबा के चित्र के आगे ही ले जाना है। और कोई चित्र आगे नहीं। पहले–2 बाप के चित्र पास। उनको भी कहना है बाबा कहते हैं– अपन को आत्म समझ मुझ बाप को याद करो। मैं तुम्हारा सुप्रीम बाप भी हूँ, सुप्रीम टीचर भी हूँ, सुप्रीम गुरु भी हूँ। सभी को यह सबक सिखलाना है। शुरू ही वहां से करना है। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करो; क्योंकि तुम जो पतित बने हो वह फिर पावन सतोप्रधान बनना है। पहले–2 यह सबक ज़रूर चाहिए। इसमें सभी बातें आ जाती हैं। सभी कोई ऐसे करते नहीं हैं। बाबा कहते हैं, पहले–2 शिवबाबा के चित्र पर ही ले जाना है। यह बेहद का बाप है। बाप कहते हैं– मामेकं याद करो अपन को आत्मा समझो। तो तुम बच्चों का बेड़ा पार है। याद करते–2 पवित्र दुनियाँ में पहुँच ही जाना है। यह सबक तो कम से कम 3 मिनट तो घड़ी–2 पक्का कराना है। बाप को याद किया? अपन को आत्मा समझा। बाबा बाबा भी है। रचयिता का रचयिता भी है। रचना के आदि–मध्य–अंत को जानते हैं; क्योंकि मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है। पहले–2 तो यह निश्चय कराना है। बाप को याद करते हो। यह नॉलेज बाप ही देते हैं। हमने भी बाप से नॉलेज ली है। जो हम आपको देते हैं। पहला–2 मंत्र ही यह पक्का कराना है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो धणी के बन जावेंगे। इसके ऊपर ही समझाना है। जब तक यह न समझे तब तक पैर आगे बढ़ाना ही नहीं है। ऐसे बाप के परिचय पर दो/चार चित्र होने चाहिए। तो उस पर अच्छी रीत समझाने से उनकी बुद्धि में आ जावेगा। हमको बाप को याद करना है। वही सर्वशक्तिवान है। उनको याद करने से ही पाप कट जावेंगे। बाप की महिमा तो क्लीयर है। पहले–2 यह ज़रूर समझाना चाहिए अपन को आत्मा समझ मामेकं याद करो। देह के सभी सम्बंध भूल जाओ। मैं सिक्ख हूँ। फलाना हूँ। यह छोड़ एक को याद करना है। पहले–2 तो बुद्धि में यह मुख्य बात बताओ। वह बाप ही पवित्रता सुख–शांति का वर्सा देने वाला है। बाप ही करैक्टर्स सुधारते हैं। तो बाप को ख़्याल आया पहला सबक इस रीति पक्का कराते नहीं हैं, जो है बिल्कुल ज़रूरी। जितना यह अच्छी रीत कुटेंगे उतना ही बुद्धि में याद रहेगा। एक बाप दूसरा न कोई; क्योंकि बाकी सभी है रचना। पहले–2 बाप का परिचय। भल 5 मिनट लग जायें हटाना न है। बहुत ही रूची से बाप की महिमा सुनेंगे। यह बाप का चित्र ही मुख्य है। क्यू सारी इस चित्र के आगे होनी चाहिए। बाप का पैगाम सभी को देना है। पीछे रचना का नॉलेज देना होता है। यह चक्र कैसे फिरता है। जैसे मश(स)ाला एकदम कु(कू)ट–2 कर महीन बनाया जाता है ना। तुम भी ईश्वरीय मिशन हो। तो अच्छी रीत एक–एक बात बुद्धि में बिठानी है; क्योंकि बाप को ही न जानने कारण सभी निर्धण के बन पड़े हैं। बाप का कोई को परिचय ही नहीं। वह पूरा परिचय देना है। बाबा सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है सुप्रीम गुरु भी है। तीनों ही कहने से फिर सर्वव्यापी की बात बुद्धि से उड़ जावेगी। गुरु तो ज्ञान देते हैं, टीचर पढ़ाते हैं। वह फिर सर्वव्यापी कैसे होगा। यह तो पहले–2 बुद्धि में बिठाओ। बाप को याद करना है तब ही तुम पतित से पावन बन सकेंगे। दैवी गुण भी धारण करनी है। सतोप्रधान बनना है। तुम उनको बाप की याद दिलावेंगे। इसमें तुम बच्चों का बहुत कल्याण है। तुम भी मनमनाभव रहेंगे। तुम पैगम्बर हो ना। तो बाप का ही परिचय देना है। बाप को याद करो। भारत में तो क्या सारी दुनियां में एक भी मनुष्य नहीं जिसको यह पता हो कि बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है, गुरु भी है। बाप का परिचय सुनने से वह बहुत ही खुश हो जावेंगे। भगवानुवाचः मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। यह भी तुम जानते हो गीता के बाद फिर महाभारत लड़ाई भी दिखाई है। अभी और तो कोई लड़ाई की बात ही नहीं। तुम्हारी लड़ाई है ही बाप को याद करने में। पढ़ाई तो

अलग है। बाकी लड़ाई है याद की बात में; क्योंकि सभी हैं देह अभिमानी। तुम अभी बनते हो देही अभिमानी। बाप को याद करने वाले। पहले–2 यह पक्का कराओ वह बाप–टीचर–गुरु भी है तीनों ही हैं। अभी हम उनकी सुनें या मनुष्यों की सुनें। मनुष्य मत पर ही इतने सारे शास्त्र बने हैं। मनुष्य मत पर बनाई हुई शास्त्रों पर तो हम बहुत–2 चले हैं। शास्त्र बनाई ही है मनुष्यों ने। वह है मनुष्य मत। यह है ईश्वरीय मत। वह है मन मत। शास्त्र जो पढ़े हैं वह भी मन मत। मनुष्य मत। मनुष्यों की(के) बनाई(ए) शास्त्र आधा कल्प पढ़ी(ढ़े) हैं। अभी श्रीमत पर चलना है श्रेष्ठ बनने लिए। हम यही सेवा करते हैं। ईश्वरीय मत पर चलो तो तुम्हारे सभी विकर्म विनाश हो जावेंगे। बाप की श्रीमत है कि मामेकं याद करो। सृष्टि का चक्र जो समझाते हैं यह भी उनकी मत है। तुम भी पवित्र बनेंगे और बाप को याद करेंगे तो बाप कहते हैं मैं साथ ले जाऊँगा। बाबा बेहद का रूहानी पण्डा भी है। उनको बुलाते भी हैं हे पतित–पावन। हमको पावन बनाकर इस पतित दुनियाँ से वापस ले चलो। वह सभी हैं जिस्मानी पण्डे। यह है रूहानी पण्डा। यह किसको भी पता नहीं है। शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। बाप तुम बच्चों को भी कहते हैं चलते–फिरते उठते–बैठते बाप को ही याद करते रहो। इसमें अपन को थकाने की भी बात नहीं। बाबा देखते हैं कब–कब बच्चे सबेरे ही आकर बैठते हैं तो ज़रूर थक जाते होंगे। यह तो सहज मार्ग है ना। हठ से बैठना नहीं है। भल चक्र लगाकर आओ, घूमो–फिरो। बहुत रुचि से बाप को याद करते रहो। बाबा–बाबा की बहुत उछल आनी चाहिए। उछल उनको आवेंगे(आवेगी) जो हरदम बाप की याद में रहते होंगे। कुछ न कुछ जो खाद है उनको निकालना है। बाप के साथ अति प्यार हो। वह अतिइन्द्रिय सुख हो। यह है अंत की बात। तुम बाप की याद में लग जावेंगे। तब ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर तुम्हारी खुशी का पारावार नहीं रहेगा। इन सभी बातों का वर्णन ही यहां होता है; इसलिए गायन भी है अति इन्द्रिय सुख गोपी वल्लभ के बच्चों से पूछो। जिनको भगवान बाप पढ़ाते हैं। भगवानुवाचः मुझे याद करो। बाप की ही महिमा बतानी है। बाप को याद कर बाप से वर्सा लेना है। वर्सा देने वाला एक ही बाप है। गुरु से कोई को भी वर्सा नहीं मिलता। सद्गति का वर्सा तो एक बाप से ही मिलता है। वर्सा देने वाला एक बाप ही है। सभी को सद्गति मिलती है ज़रूर। पहले सभी जावेंगे शांतिधाम। यह भी तुम्हारी बुद्धि में होना चाहिए बाप हमको सद्गति दे रहे है। शांतिधाम–सुखधाम किसको कहा जाता है यह तो समझाया है। शांतिधाम में सभी आत्माएं रहती हैं। स्वीट सायलेंस होम। टॉवर ऑफ सायलेंस। उसको इन आँखों से कोई देख न सके। वह साइंस घमण्डी इन आँखों से जो चीज़ देखते हैं उस पर ही बुद्धि चलती है। आत्माओं को तो इन आँखों से कोई देख न सके। समझ सकते हैं। जबकि आत्मा को ही नहीं देख सकते तो बाप को भी फिर कैसे देख सकते। यह समझ की बात है ना। इन आँखों से देखा नहीं जा सकता। भगवानुवाचः है मुझे याद करो तो पाप भस्म होंगे। यह किसने कहा है पूरा समझ नहीं सकते हैं। वह समझते हैं कृष्ण के लिए। कृष्ण को बहुत याद करते हैं। दिन–प्रतिदिन व्याभिचारी होते जाते हैं। भक्ति में भी पहले एक शिव की भक्ति करते थे वह है अव्यभिचारी भक्ति। फिर ल.ना. विष्णु की भक्ति में आये हैं। ऊँच ते ऊँच है भगवान। वही वर्सा देते हैं यह विष्णु बनने का। तुम विष्णु वंशी गाते हो। विष्णु के फिर मालिक बनते हैं। माला बनती ही तब है जब पहला सबक अच्छी रीत पढ़ते हैं। बाप को याद करना कोई मासी का घर नहीं है। सभी तरफ से बुद्धि योग हटाये एक तरफ लगाना है। जो कुछ इन आँखों से देखते हो उनसे बुद्धि योग हटा दो। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। इसमें मुँझना न है। बाप इस रथ में बैठे हैं। उनकी ही महिमा करते हैं। वह है निराकार। इन द्वारा हमको यह घड़ी–2 याद दिलाते हैं। तुम मनमनाभव होकर रहो गोया तुम सभी पर उपकार करते हो। जब खाना पकाने वाले को भी कहते हैं शिवबाबा को याद करो तो सभी की बुद्धि में बैठ जावेगा। एक दो को ही याद दिलाना है। शिवबाबा को याद करो। तो वह आदत पड़ जावेगी। पहले–2 शिवबाबा। आगे चल बाबा यह चित्र आदि भी उड़ाते रहेंगे। यह सभी

ख़त्म होनी ही है। तो मुख्य बात है बाप की याद। बाप सभी बच्चों को याद करते हैं ना। कुछ न कुछ मदद करते हैं। कोई आधा घण्टा बैठते हैं, कोई दस मिनट बैठते हैं। अच्छा 5 मिनट बैठते हैं बाप को याद किया तो राजधानी में आवेंगे। राजा–रानी हमेशा सभी को प्यार करते हैं। तुम भी प्यार के सागर बनते हो ना; इसलिए सभी पर प्यार रहता है। प्यार ही प्यार। बाप प्यार का सागर है तो बच्चों को भी ज़रूर ऐसा प्यार होगा। तब वहां भी प्यार करेंगे। राजा–रानी का भी बहुत प्यार होता है। बच्चों का भी बहुत प्यार होता है। प्यार भी बेहद का। यहां तो प्यार का नाम नहीं। मार है। कटारी मारने का कब ख़्याल भी न करना चाहिए। यह है एक दो को खून करना। सारी दुनियाँ में एक/दो को कोस(ा) करते हैं। वहां हिंसा कटारी होती ही नहीं; इसलिए भारत की महिमा अपरम्पार गाई हुई है। भारत जितना पवित्र देश कोई है नहीं। यह सभी से महाभारी तीर्थ है। बाप आते ही हैं यहां। बाप आकर सभी की सेवा करेंगे। सभी को पढ़ावेंगे ना। मुख्य है पढ़ाई। तुमसे कोई–2 पूछते हैं तुम भारत की क्या सेवा करते हो। बोलो, तुम चाहते हो भारत पावन हो। अभी पतित है ना। तो हम श्रीमत पर भारत को पावन बनाते हैं। सभी को कहते हो बाप को याद करो। तो पतित से पावन बन जावेंगे। हम रूहानी सेवा कर रहे हैं। भारत जो सॉलवेंट था पीस प्रॉस्पर्टी थी। वह फिर से बना रहे हैं। श्रीमत पर। कल्प पहले मुआफ़िक ड्रामा प्लैन अनुसार। यह अक्षर पूरी(ा) याद करो। ड्रामा के प्लैनअनुसार। मनुष्य चाहते हैं वर्ल्ड में पीस हो। सो हम कर रहे हैं। भगवानुवाच। बाप हम बच्चों को समझाते रहते हैं। मुझे याद करो। यह भी बाबा जानते हैं। तुम कोई इतना याद थोड़े ही करते हो। इसमें ही मेहनत है। याद से ही तुम्हारी कर्मातीत अवस्था आवेगी। तुमको स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। इनका अर्थ भी किसकी बुद्धि में नहीं है। शास्त्रों में तो दंत कथाएं लिख दी हैं। अभी बाप तो कहते हैं जो कुछ पढ़े हो वह सभी भूल जाना है। अपन को आत्मा समझना है। अब मैं तो पढ़ाता हूँ वही साथ चलना है। और कुछ भी साथ नहीं चलेगा। यह बाप की पढ़ाई ही साथ चलना है। इसके लिए (कोशिश कर) रहे हैं। छोटे–2 बच्चे को भी कम मत समझो। जितना छोटे उतना नाम निकाल सकते हैं। छोटी–2 बच्चियाँ बैठ बूढ़ों को समझावेंगे(ी) तो कमाल कर दिखावेंगे(ी)। उन्हों को भी आप समान बनाना है। कोई प्रश्न पूछे तो रेसपॉण्ड दे सके। ऐसे तैयार करो। फिर जहां–2 सेंटर वा म्यूज़ियम हों तो उनको भेज देना चाहिए। ऐसा ग्रुप तैयार करो। टाइम तो बहुत है। ऐसी–2 सर्विस करो। बड़े–2 बुज़ुर्गे(ी) को यह छोटी–2 कुमारियाँ बैठ समझावें तो कमाल है। कोई पूछे, किसके बच्चे हो? हम शिवबाबा के। वह निराकार है। ब्रह्मा तन में आकर हमको पढ़ाते हैं। इस पढ़ाई से ही हमको यह बनना है। सतयुग आदि में इन ल.ना. का राज्य था ना। इनको ऐसे किसने बनाया। ज़रूर ऐसे कर्म किये होंगे ना। बाप बैठ कर्म–विकर्म–अकर्म की गति सुनाते हैं। शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। वही बाप टीचर–गुरु है। तो बाप समझाते हैं मूल एक बात पर ही खड़ा कर समझाना है। पहले–2 अलफ़। अलफ़ को समझावेंगे तो इतने फिर प्रश्न आदि कोई पूछेंगे नहीं। अलफ़ समझने बिगर बाकी और चित्रों पर समझेंगे तो माथा ही खराब कर देंगे। पहली बात है ही अलफ़ की। हम श्रीमत पर चलते हैं। बाकी शास्त्र आदि सभी मनुष्य की मत। श्रेष्ठ बनाने वाला है बाप। भ्रष्ट बनाने वाले(ी) है मनुष्य मत। ऐसे–2 समझाने से फिर कोई बात पर प्रश्न आदि नहीं उठावेंगे। ऐसे ही निकलेंगे जो कहेंगे अलफ़ समझ लिया बाकी यह चित्र आदि क्या देंगे। हम अलफ़ को जान लिया तो सभी कुछ समझ लिया। भिक्षा मिली यह गया। तुम फर्स्ट क्लास भिक्षा देते हो। बाप का परिचय देने से ही बाप को जितना याद करेंगे तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप–दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

सृष्टि चक्र याद है? बाप और वर्सा याद है?